IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सिख धर्म का ऐतिहासिक अध्ययन (1469–1730)

गुरप्रीत कौर

शोधार्थी, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

डॉ0 महेश चन्द्र

शोध पर्यवेक्षक, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान

सारांश

सिख धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में जन्मा एक मानवतावादी, जातिविहीन व ज्ञानतत्ववादी धर्म है। यह धर्म न केवल धार्मिक विचारधारा की क्रान्तिकारी चलन था, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता व स्वतन्त्रता की चेतना भी लिए हुए था। इस प्रकार सिख धर्म केवल एक धार्मिक आन्दोलन नहीं था बल्कि उस समय के सामाजिक परिवर्तनों की माँग सिख धर्म मानवता, समानता, प्रेम और साहस की परम्परा को भी साथ लिए हुए था। गुरु नानक की नीतियों की विशेषता यह थी कि (उन्होंने) धर्म के लिए यह स्पष्ट सिद्धांत निर्धारित कर दिए कि धर्म किसी भी प्रकार की रूढ़िवादिता, कर्मकांड व अंधविश्वासों से ऊपर हमेशा रही। और यह विचारधारा समाज में समरसता और अध्यात्म बन सकती है। समस्त सिख धर्म की ऐतिहासिकता का प्रमुख पहलू यही है।

प्रस्तावना

सिख धर्म की उत्पत्ति भारतवर्ष के मध्यकालीन इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना थी। जिसने केवल धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्तर पर भी अपनी गहरी छाप छोडी। सिख धर्म का विकास किसी एक धार्मिक प्रवृत्ति या किसी क्रांति का परिणाम नहीं था बल्कि यह उस व्यापक ऐतिहासिक, सामाजिक व धार्मिक परिस्थितियों का परिणान था, जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप विशेषतः उत्तर पश्चिमी भाग भारत को प्रभावित किया। 15वीं शताब्दी में भारत जब खासकर पंजाब क्षेत्र एक उत्कट घार्मिक संतप्त से गुजर रहा था और उस समय (दिल्ली) सल्तनत के उत्तराधिकारी दुष्ट, महत्वाकांक्षी और स्वार्थी शासकों की पराजय ने समाज को पूरी तरह अशांत व असंतुलित कर दिया था। साथ ही धार्मिक कुरीतियाँ, ब्राह्मणवाद, कर्मकांड युक्त व्यवस्था और पाखंडों ने अध्यात्मिकता को ढक लिया था। दूसरी ओर देहली की शासकों द्वारा धार्मिक दमन, नारियों में तेजीफाई,

जबरन मतांतरण जैसी घटनाओं ने जनमानस को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया था और सामाजिक शोषण, नारी उत्पीड़न, जमींदारों की मनमानी, छुआछूत जैसी विघटनकारी समस्याओं के पीड़ित कर रही थीं।

उसी समय भारत की धार्मिक परंपराएँ भी बहुत ही जटिल, विशिष्टतापूर्ण व गहन चितन से परिपूर्ण थी। विदेशी आक्रमणों के चलते सम्मिलन दृष्टि ने विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों व विचारधाराओं का तद्भव हुआ, जिन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया। सिख धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न एक प्रमुख धर्म है, जिसकी नींव 15वीं शताब्दी में गुरु नानक देव द्वारा रखी गई थी। यह धर्म सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दृष्टि से उस समय की समस्याओं की मनोवैज्ञानिक, स्वभाव जन्य, एवं भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव, धार्मिक दमन तथा सीमा पर थे।

सिख धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में जन्मा एक मानवतावादी, जातिविहीन व ज्ञानतत्ववादी धर्म है। यह धर्म न केवल धार्मिक विचारधारा की क्रान्तिकारी चलन था, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता व स्वतन्त्रता की चेतना भी लिए हुए था। इस प्रकार सिख धर्म केवल एक धार्मिक आन्दोलन नहीं था बल्कि उस समय के सामाजिक परिवर्तनों की माँग सिख धर्म मानवता, समानता, प्रेम और साहस की परम्परा को भी साथ लिए हुए था। गुरु नानक की नीतियों की विशेषता यह थी कि (उन्होंने) धर्म के लिए यह स्पष्ट सिद्धांत निर्धारित कर दिए कि धर्म किसी भी प्रकार की रूढ़िवादिता, कर्मकांड व अंधविश्वासों से ऊपर हमेशा रही। और यह विचारधारा समाज में समरसता और अध्यात्म बन सकती है। समस्त सिख धर्म की ऐतिहासिकता का प्रमुख पहलू यही है।

बल्कि यह सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह धर्म आध्यात्मवाद, मानवता, समानता व धर्म की निरपेक्ष व्याख्या पर आधारित है। सिख धर्म के विकास हेतु वातावरण में व्याप्त अराजकता, समाज में व्याप्त दूषित परम्पराएँ व नए सामाजिक होने की लहर ने एक नई चेतना, नई दिशा व नए समाज होने की लहर थी। इसी धार्मिक, सामाजिक, धार्मिक कट्टरता व अन्याय ने सिखों आवाज उठाई और एक नई दिशा, नई जागृति का संचालन किया।

सिख धर्म की उत्पत्ति

सिख धर्म का जन्म दक्षिण एशिया के पंजाब क्षेत्र में हुआ था, जो अब भारत और पाकिस्तान के राज्यों में आता है। उस समय इस क्षेत्र के मुख्य धर्म हिंदू धर्म और इस्लाम थे।

सिख धर्म की शुरुआत लगभग 1500 ई. में हुई, जब गुरु नानक ने एक ऐसे धर्म की शिक्षा देना शुरू किया जो हिंदू धर्म और इस्लाम से बिल्कुल अलग था।

नानक के बाद नौ गुरुओं ने सिख धर्म और समुदाय का विकास किया।

पांचवें गुरु, गुरु अर्जन के समय तक सिख धर्म अच्छी तरह से स्थापित हो चुका था।

गुरु अर्जन देव ने सिख जनता की राजधानी के रूप में अमृतसर की स्थापना पूरी की तथा सिख धर्म की पहली अधिकृत पुस्तक, आदि ग्रंथ का संकलन किया।

हालांकि, अर्जन के समय में सिख धर्म को राज्य द्वारा एक खतरे के रूप में देखा गया और अंततः 1606 में गुरु अर्जन को उनके विश्वास के लिए मार दिया गया।

छठे गुरु हरगोबिंद ने समुदाय का सैन्यीकरण शुरू कर दिया ताकि वे किसी भी उत्पीड़न का विरोध करने में सक्षम हो सकें। सिखों को अपने विश्वास की रक्षा करने के लिए कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं।

इसके बाद सातवें, मुगल सम्राट औरंगजेब के समय तक राजनीतिक शासकों के साथ अपेक्षाकृत शांति से रहते थे, लेकिन अपनी प्रजा को इस्लाम स्वीकार करने के लिए बल का प्रयोग किया गया था।

औरंगजेब ने नौवें गुरु तेग बहादुर को गिरफ्तार कर लिया और 1675 में उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया।

दसवें गुरु, गोविंद सिंह ने 1699 में सिखों को खालसा नामक पुरुषों और महिलाओं के एक सैन्य समूह के रूप में पुनर्गठित किया, जिसका उद्देश्य यह था कि वे सिख धर्म की रक्षा करने में समर्थ रहें।

गोविंद सिंह ने सिख दीक्षा संस्कार (जिसे सिखों दी पहुल कहा जाता है) और 5 क की स्थापना की, जो सिखों को उनका विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते हैं। पाँच क (केश, कंघा, कड़ा, कच्छा, कृपाण) सामूहिक पहचान व आत्मसम्मान का प्रतीक।

सिख धर्म का उद्भव और प्रारंभिक स्वरूप

सिख धर्म का उद्भव 15वीं शताब्दी के उत्तरार्दध में हुआ, जब भारतवर्ष राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विचलन, धार्मिक अंधविश्वास और जातिगत भेदभाव से जूझ रहा था। ऐसे समय में गुरु नानक देव जी ने एक नई आध्यात्मिक धारा की शुरुआत की, जो बाद में ''सिख धर्म'' के रूप में विकसित हुई। यह धर्म न केवल धार्मिक आंदोलन बन गया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी वाहक बना।

सिख धर्म का जन्म उस युग में हुआ जब भारतीय समाज में भयंकर धार्मिक पाखंड, मूर्ति पूजा, और कर्मकांडों का बोलबाला था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही समाजों में आम जनता शोषण और भय के वातावरण में जी रही थी। संत कबीर, रैदास, नामदेव जैसे भक्ति आंदोलन के संतों ने इस वातावरण में सुधार की कोशिश की, लेकिन गुरु नानक देव जी ने उसे एक संगठित धर्म के रूप में दिशा दी।

गुरु नानक ने धर्म को केवल एक मत या समुदाय की सीमाओं से ऊपर उठाकर ''धर्म'' को मानवता का पर्याय बनाया। उन्होंने सिख शब्द को 'शिष्य' के अर्थ में प्रयुक्त किया अर्थात् ईश्वर के मार्ग का सच्चा अनुयायी।

सिख धर्म की प्रारंभिक मान्यताएँ

सिख धर्म के प्रारंभिक स्वरूप की नींव तीन मूल सिद्धांतों पर आधारित थीः

1. **नाम सिमरन (ईश्वर का स्मरण)** निरंतर 'नाम' का जाप अर्थात् परमात्मा को सच्चे मन से स्मरण करना।
2. **कीरत करो (ईमानदारी से कमाना)** परिश्रम और ईमानदारी से जीवन यापन करना।
3. **वंड छको (बांटकर खाना)** समाज में परस्पर सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी का निर्वाह।

इन सिद्धांतों ने उस समय के रूढ़िवादी और पाखंडी धार्मिक व्यवहार को चुनौती दी।

गुरु नानक देव जी के बाद सिख धर्म को उनके उत्तराधिकारियों ने व्यवस्थित किया। गुरु अंगद देव जी ने गुरुमुखी लिपि को विकसित कर सिख धर्म की धार्मिक ग्रंथों को लिखित रूप दे दिया। गुरु अमरदास जी ने लंगर प्रथा और प्रचार तंत्र को संगठित किया, जिससे सिख धर्म एक समुदाय के रूप में उभरने लगा।

गुरु रामदास और गुरु अर्जुन देव जी ने धार्मिक स्थलों का निर्माण (जैसे अमृतसर और हरमंदिर साहिब) करवाया और समाज को एक धार्मिक केंद्र से जोड़ा। गुरु अर्जुन देव जी द्वारा ''आदि ग्रंथ'' की रचना सिख धर्म के आध्यात्मिक विकास में मील का पत्थर सिद्ध हुई।

सिख धर्म की विशेषताएं

सिख धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यावहारिकता, सामाजिक समरसता और उदार धार्मिक दृष्टिकोण है। यह धर्म न तो हिन्दू धर्म की तरह मूर्ति पूजा को मानता है और न ही इस्लाम की तरह किसी एक रस्म को अंतिम सत्य मानता है। इसमे एकेश्वरवाद है, पर बह ईश्वर निर्गुण और निराकार है।

सिख धर्म का प्रारंभिक स्वरूप गुरु की शिक्षाओं, समाज सेवा, और धर्म के नाम पर इंसानियत की सेवा पर केंद्रित रहा। यही कारण है कि प्रारंभिक सिख समाज कर्तव्य, समर्पण और मानवत्ता के प्रति उत्तरदायी बना।

गुरु परंपरा की अवधारणा

सिख धर्म में गुरु किसी एक व्यक्ति विशेष का नाम नहीं बल्कि चेतना, शिक्षाशैली और सक्रिय समाज–सुधार का पर्याय है। 1469 से 1708 तक दस गुरुओं की निरंतर क्रमबद्ध परंपरा ने आध्यात्मिक मार्गदर्शन को शक्तिशाली सामाजिक आंदोलन में रूपांतरित किया। प्रत्येक गुरु ने अपने युग की चुनौतियों के अनुरूप धर्म, संस्कृति और समाज का पुनर्निर्माण किया और यही क्रम सिख समुदाय की विशिष्ट पहचान बना।

गुरु–परंपरा के मुख्य आयाम

1. आध्यात्मिक मार्गदर्शन एकेश्वरवाद व ''नाम सिमरन पर बल।
2. सामाजिक समरसता जाति–धर्म–लिंग भेद का निरसन।
3. संगठित संस्थागत डींचा गुरुद्वारा, लंगर, मंजबी पंथी प्रणाली।
4. सैन्य–आत्मरक्षा गुरु हरगोबिंद से गुरु गोविंद सिंह तक क्रमिक सशस्त्रीकरण।

गुरु अंगद देव जी (1539–1552) लिपि, शिक्षा और अनुशासन

गुरु नानक के उत्तराधिकारी गुरु अंगद देव जी ने गुरमुखी लिपि को मानकीकृत किया। यह केवल लेखन–पद्धति नहीं सांस्कृतिक स्वायत्तत्ता का उपकरण था, जिससे सिख विचारधारा को मौलिक परंपरा से लिखित साझा विरासत में बदला। उन्होंने बच्चों के लिए पाठशालाएं शुरू कर समाज को साक्षरतादृकौशल दिशा दी। शारीरिक अनुशासन हेतु मल्लखंभ–कुश्ती जैसी गतिविधियों प्रचलित कर, उन्होंने एक स्वस्थ, सक्षम कौम का आधार रखा।

गुरु अमरदास जी (1552–1574) समरसता और प्रशासनिक ढाँचा

गुरु अमरदास जी ने लंगर प्रथा को अनिवार्य बनाया कृ राजा–रंक एक पंक्ति में स्त्री–पुरुष समान आसन पर। यह सामाजिक समता का जीवंत प्रतीक बन गया। उन्होंने 22 मंजबियों (धार्मिक केंद्र) और 52 पिठियाँ (महिलाओं के नेतृत्व वाली इकाइयाँ) स्थापित कर विकेन्द्रीकृत प्रशासन विकसित किया। लेखन–प्रथा, सती–परंपरा और जातिगत भेदभाव पर कठोर लेखन से समाज–सुधार को सस्थागत रूप दिया।

गुरु रामदास जी (1574–1581) व गुरु अर्जन देव जी (1581–1606) नगर–निर्माण से गुरु–ग्रंथ तक

गुरु रामदास ने अमृतसर शहर की नींव रखी और सरोवर (पवित्र कुंड) का निर्माण प्रारम्भकिया। धार्मिक केन्द्र को शहरी बसावट से जोड़कर उन्होंने आर्थिक सास्कृतिक एकता रखी।

गुरु अर्जन ने सरीवर मध्य हरमंदिर साहिब पूर्ण कराया चारों दिशा खुले द्वारों ने सिख धर्म की सर्वसमावेशी चेतना को वास्तुरूप में डाल दिया।

निष्कर्ष

ठस प्रकार, सिख धर्म का सामाजिक–राजनीतिक स्वरूप स्पष्ट हुआ, जिससे आगे चलकर पंजाब की राजनीतिक सत्ता में उनका महत्व बढ़ाया।

1469 से 1730 तक का काल सिख धर्म के लिए विकास, संघर्ष और सशक्तिकरण का काल था। गुरु नानक देव से लेकर गुरु गोबिंद सिंह तक गुरुओं ने न केवल धार्मिक शिक्षाएं दीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और राजनीतिक जागरूकता के लिए सिखों को प्रेरित किया।

इस अवधि में सिख धर्म ने एक धार्मिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में आकार लिया, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास को गहराई से प्रभावित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमीर ए., 1978, दि स्प्रिरिट ऑफ इस्लाम इदराह–1 अदबियार, नई दिल्ली
2. अरॉन आर, 1967, मेन करेंट्स इन सोसिअलॉजिकल थाट्स वाल्यूम II मेनजिन : लंदन
3. बर्टान, ए.जी. 1990, दि रिलीजन ऑफ दि वर्ल्ड, ऑलिम्पिया पब्लिकेशन।
4. बिसेंट, ए. 1966, सैवन ग्रेट रिलीजन्स, दि थियासोफिकल पब्लिसिंग हाउस : मद्रास
5. बाब्ब एल, 1991, सत्य साई बाबा मीराकल इन मदन टी. एन. (संपा), रिलीजन इन इंडिया।
6. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली
7. कैल्लट, सी, 1987, ''जैनिज्म'' दि इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन, मैकमिलन, पब्लिसिंग कम्पनी न्यूयार्क।
8. चोपड़ा, पी.एन., 1980 ''हिन्दूइज्म एंड बुद्धीज्म'' इन पी.एन. चौपड़ा (संपा)। आवर कल्चरल फैबरिक बुद्धीज्म इन इंडिया एंड अब्राड, मिनीस्टरी आफ एजूकेशन एंड कल्चर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
9. कलेमैन, सी. (संपा) 1988, रिलीजन्स ऑफ दि वर्ल्ड मानस पब्लिकेशन, नई दिल्ली
10. गोमेज, एल.ओ. 1987, ''बुद्धीज्म इन इंडिया'' दि इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन, मैकमिलन पब्लिसिंग कम्पनी न्यूयार्क।
11. हिट्टेबिटल, 1987, ''हिन्दूइज्म'' इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन, मैकमिलन पब्लिसिंग कम्पनी, न्यूयार्क।
12. हैकमन्न, एच. 1988, बिद्धीज्म इन क्लेमन, सी. (संपा) रिलीजन्स ऑफ दि वर्ल्ड, मानस पब्लिकेशनः नई दिल्ली